चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	**03.08.2020**	**10**	**06-08**

The long road ahead

DEEPENDER DESWAL

THE agriculture sector is not enthused by the *Atmanirbhar Bharat* slogan. Farmers feel that the government's insistence on their self-reliance is a climbdown on its promise of doubling their income.

"As far as foodgrain production is concerned, the peasantry in Haryana and Punjab is not only self-reliant but also contributes to the national food kitty in a big way. What we want is an improvement in our living standards," says Prabhu Ram, a farmer of Kirtan village in Hisar district who owns five acres. He says despite utilising the services of the entire family throughout the year, he is not able to earn enough to afford good schooling for his children or own a car. "After pouring blood and sweat into farming, we still don't have a decent lifestyle," he rues.

Dr Kuldeep Dhindsa, an agriculture expert, says the implementation of the recommendations of the Swaminathan Commission can put the farmers in a much better position and uplift the sector as a whole, adding that farmers should be given the minimum support price (MSP) for their produce.

Ramesh Kumar, a farmer of Bhiwani, says flawed policies like the recent ordinances issued in the name of agricultural reforms are ruining farmers. "These retrograde steps could prove counterproductive instead of making the sector self-reliant," he claims, adding that the attempt to introduce privatisation in the sector would spell doom for the farmers.

The Vice Chancellor of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Prof Samar Singh, says the farm sector employs 55 per cent of the population and contributes 17 per cent to the GDP. "A great performance by the farmers of Haryana and Punjab ensured that the country became self-reliant in food production. However, the sharp deceleration of agriculture growth in both states is intriguing," he adds.

The VC says the state government's steps to provide irrigation facilities, all-weather roads to provide rural connectivity and assured market for agricultural produce has helped the farmers. "The future of agricultural prosperity lies in the high-value sectors of agriculture. The state needs to promote crop diversification and encourage the food processing industry, besides micro irrigation technology and sectors such as livestock, fisheries and horticulture," he says, adding that paddy cultivation is leading to massive depletion of the water table.

Prof SS Punia, head of the Agronomy Department, HAU, says milk processing needs to be promoted aggressively by the state government. Although Haryana is among the toppers in 'per capita per day' availability of milk in the country, only 10 per cent of the total production of the state is processed by the organised sector (co-operatives and private players), which is very low compared to Gujarat (about 50 per cent).

"The government should provide incentives to the private sector to improve milk processing and set up several plants to process at least 30-35 per cent of the total production in the coming five years. Linking maize farmers with the dairy sector will help increase milk production through the supply of quality feed. But the abundance of liquid milk will put a downward pressure on its price. The government should incentivise the setting up of milk processing units; The state government can also make the rearing of cattle more profitable to farmers through its vibrant dairy sector, besides developing meat processing, especially of buffaloes, as an export-oriented industry," he says.

Stumbling block

Prabhu Ram, a farmer of Hisar's Kirtan village who owns five acres, says despite utilising services of his family throughout the year, he is not able to earn enough to afford good schooling for his kids or own a car. "After pouring blood and sweat into farming, we still don't have a decent lifestyle," he rues.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	05.08.2020	02	03-05

एचएयू के कुलपति ने कहा-बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न की आधुनिक खेती से विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं किसान

भास्कर न्यूज | हिसार

प्रदेश में भूमिगत जलस्तर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूं-धान फसल चक्र का सही नहीं होना है, जिससे भूमिगत जल का अत्याधिक दोहन हुआ है, जोकि भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव जरूरी है। इस समस्या के मद्देनजर एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का और बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेश में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कुलपति के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्टूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	05.08.2020	09	03-08

कम समय में ज्यादा मुनाफा देती हैं ये फसलें : प्रो. समर सिंह

स्वीटकॉर्न की खेती से विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं किसान

- फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है
- मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है

हरिभूमि न्यूज ›› हिसार

प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूं-धान फसल चक्र है, जिससे भूमिगत जल का अत्याधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का और बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं।

कुलपति के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

ये बनते हैं मुख्य व्यंजन

बेबीकॉर्न का प्रयोग दोनों प्रकार से कच्ची व पकाकर किया जा सकता है। इसका उपयोग मुख्यतः 30-40 व्यजंन के रूप में किया जा सकता है। इनमें सब्जी, सलाद, मुरब्बा, सूप, चटनी, टिक्की, अचार, कोफ्ता, हलवा, बर्फी, जैम, लड्डू, भुजिया, खीर, सॉस, कटलेट, चाट, मनचूरियन, पीजा, सैंडविच, वड़ा, उपमा, आमलेट, चिल्ला, कॉर्न उत्पम, सांभर, फ्रूटक्रीम, बेबीकॉर्न पुलाव इत्यादि शामिल हैं। साधारण मक्का में चीनी की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत होती है जबकि स्वीटकॉर्न में यह लगभग 7 प्रतिशत या इससे अधिक होती है। दाने के ऊपर का छिलका बहुत ही नरम होने की वजह से स्वीटकॉर्न बहुत ही स्वादिष्ट होती है। स्वीटकॉर्न को कच्चा, भून कर या उबाल कर खाया जा सकता है। यह सब्जी, सूप एवं अनेक पकवान जैसे स्वीटकॉर्न मिल्क, केक, क्रीम, पिज्जा आदि उत्पाद बनाने में उपयोग होता है। इसकी हरी छल्ली तोड़ने के बाद पौधे को काट कर हरे चारे के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है।

दिसंबर व जनवरी को छोड़कर पूरे साल खेती कर सकते हैं किसान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्तुबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यह फसल कम समय मे अच्छा मुनाफा देती है। उन्होंने सलाह दी कि किसान ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रसंस्करण उद्योग लगाकर अपनी आय सुनिश्चित कर सकते हैं और विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। डॉ. मेहरचंद कंबोज के अनुसार किसान बेबीकार्न की संकर किस्में एच.एम. 4 व अन्य जल्दी पकने वाली संकर किस्में अच्छी रहती हैं। वर्ष मे बेबीकॉर्न की 3-4 फसलें ली जा सकती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	05.08.2020	03	06-07

बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न की आधुनिक खेती से कमा सकते हैं विदेशी मुद्रा : कुलपति

कम समय में ज्यादा मुनाफा देती हैं ये फसलें

हिसार, 4 अगस्त (ब्यूरो) : प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूं-धान फसल चक्र है, जिससे भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है। उपरोक्त समस्या के मद्देनजर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का, बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं।

कुलपति के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र

में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

दिसम्बर व जनवरी को छोड़कर पूरे साल खेती कर सकते हैं किसान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसम्बर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्तूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	04.08.2020	--	--

बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न की आधुनिक खेती से विदेशी मुद्रा कमा सकते

पांच बजे न्यूज

हिसार। प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूं-धान फसल चक्र है, जिससे भूमिगत जल का अत्याधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है। उपरोक्त समस्या के मद्देनजर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का और बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कुलपति महोदय के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

दिसंबर व जनवरी को छोड़कर पूरे साल खेती कर सकते हैं किसान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्तुबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यह फसल कम समय मे अच्छा मुनाफा देती है। उन्होंने सलाह दी कि किसान ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रसंस्करण उद्योग लगाकर अपनी आय सुनिश्चित कर सकते हैं और विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं।

कीटनाशकों के प्रभाव से होती है मुक्त

उन्होंने बताया कि दाना बनने से पहले भुट्टे को बेबीकार्न या शिशु मक्का कहा जाता है। इसकी लंबाई 7-10 सैं.मी. व रंग क्रीमी होता है। बेबीकॉर्न आसानी से पचाई जा सकती है। पत्तों में लिपटी होने के कारण यह कीटनाशक दवाइयों के प्रभाव से मुक्त होती है। इसमें फॉस्फोरस, प्रोटीन, कैल्शियम, लोहा व विटामिन भी पाए जाते है।

संकर किस्मों से वर्ष में ले सकते हैं तीन से चार फसलें

डॉ. मेहरचंद कंबोज के अनुसार किसान बेबीकार्न की संकर किस्में एच.एम. 4 व अन्य जल्दी पकने वाली संकर किस्में अच्छी र है। वर्ष मे बेबीकॉर्न की 3-4 फसलें ली सकती है। इसकी बिजाई मेढ़ों पर या लाइनों करनी चाहिए। मेढ़ से मेढ़ की दूरी 60 सैं. व पौधे से पौधे की दूरी 15 सैं.मी. हो चाहिए। इसके अलावा इसकी फसल में र के रूप में डी.ए.पी. 52 किलोग्राम, यूरि 110 किलोग्राम, एम.ओ.पी. 40 किलोग्राम जिंक सल्फेट 10 (कि.ग्रा./एकड़) उपयु रहती है। डी.ए.पी. व एम.ओ.पी. की पूरी म व यूरिया का एक तिहाई भाग खेत की तैय के समय तथा एक तिहाई भाग फसल घुटनों की ऊंचाई के समय तथा शेष तिहाई भाग फसल के झंडे आने की अव में दें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	04.08.2020	--	--

किसानों के लिए बेबीकॉर्न की खेती अत्यंत लाभदायक : कुलपति

हिसार/04 अगस्त/रिपोर्टर

प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूं धान फसल चक्र है जिससे भूमिगत जल का अत्याधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है। उपरोक्त समस्या के मद्देनजर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का उच्च गुणवत्ता मक्का और बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कुलपति के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की कटाई करने पर प्रति एकड़ किसान 6.7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80.100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा,चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्तूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यह फसल कम समय में अच्छा मुनाफा देती है। उन्होंने सलाह दी कि किसान ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रसंस्करण उद्योग लगाकर अपनी आय सुनिश्चित कर सकते हैं

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति टाईम्स	04.08.2020	--	--

जल का अत्याधिक दोहन संकट की ओर इशारा : वीसी

हकृवि कुलपति प्रो. समर सिंह बोले, बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न की आधुनिक खेती से विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं किसान

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूं-धान फसल चक्र है, जिससे भूमिगत जल का अत्याधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है। उपरोक्त समस्या के मद्देनजर चौधरी चरण सिंह

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का और बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकार्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कुलपति महोदय के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

दिसंबर व जनवरी को छोड़कर पूरे साल खेती कर सकते हैं किसान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्तुबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यह फसल कम समय मे अच्छा मुनाफा देती है। उन्होंने सलाह दी कि किसान ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रसंस्करण उद्योग लगाकर अपनी आय सुनिश्चित कर सकते हैं और विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं।

कीटनाशकों के प्रभाव से होती है मुक्त

उन्होंने बताया कि दाना बनने से पहले भुट्टे को बेबीकार्न या शिशु मक्का कहा जाता है। इसकी लंबाई 7-10 सैं.मी. व रंग क्रीमी होता है। बेबीकॉर्न आसानी से पचाई जा सकती है। पत्तों में लिपटी होने के कारण यह कीटनाशक दवाइयों के प्रभाव से मुक्त होती है। इसमें फॉस्फोरस, प्रोटीन, कैल्शियम, लोहा पाए जाते हैं।

संकर किस्मों से वर्ष में ले सकते हैं तीन से चार फसलें

डॉ. मेहरचंद कंबोज के अनुसार किसान बेबीकार्न की संकर किस्में एच.एम. 4 व अन्य जल्दी पकने वाली संकर किस्में अच्छी रहती हैं। वर्ष मे बेबीकॉर्न की 3-4 फसलें ली जा सकती हैं। डॉ. धर्मबीर यादव ने बताया कि बेबीकोर्न की काश्त के लिए प्रति एकड़ 10 से 12 किलोग्राम बीज की जरूरत होती है। बेबीकॉर्न की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए नरमंजरी (झण्डे) निकालना बहुत जरूरी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जुल्म से जंग)	01.08.2020	--	--

किस्मों के प्रमाणित बीज तैयार करें वैज्ञानिक: कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जुल्म से जंग)	**04.08.2020**	--	--

विश्व मित्रता दिवस पर एक-दूसरे की मदद का संकल्प लें विद्यार्थी

Posted on August 4, 2020 by Admin (https://julmsejung.com/?author=1) |

हिसार, राजेन्द्र अग्रवाल: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा 'विश्व मित्रता दिवस' पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों से सौहार्द भावना को बनाए रखने का आह्वान् किया। उन्होंने कहा कि हमें 'विश्व मित्रता दिवस' पर संकल्प लेना चाहिए कि हम जरूरत पडने पर एक-दूसरे की मदद कर सकें। इसके अलावा ऐसे मैत्रीपूर्ण संबंध विकिसत करने चाहिए जो भविष्य में भी काम आ सकें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को इन मित्रतापूर्वक संबंधों को एक परिवार के रूप में भी विकसित करना चाहिए ताकि भविष्य में हमारा एक अच्छा सामाजिक दायरा बन सके। छात्र कल्याण निदेशालय के निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के 5 महाविद्यालयों के 21 छात्र व 21 छात्राओं सहित कुल 42 प्रतिभागियों ने भाग लिया। ऑनलाइन प्रतियोगिता में कुल 10 प्रश्न पूछे गए जिसके लिए 10 मिनट का समय निर्धारित किया गया था। प्रतियोगिता में प्रथमए द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों ने सभी प्रश्नों के उत्तर सही दिए लेकिन प्रतियोगिता के परिणाम निर्धारित समयावधि के अनुसार तय किए गए। उन्होंने बताया कि कृषि महाविद्यालय हिसार के अक्षय महता ने सबसे कम समय 7 मिनट 34 सेकंड में सभी प्रश्नों के सही उत्तर देकर प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि सचिन गर्ग ने 9 मिनट 38 सेकंड का समय लेकर द्वितीय व कृषि महाविद्यालय (कौल) केथल की छात्रा रीतिका ने 9 मिनट 48 सेकंड का समय लेकर तृतीय स्थान हासिल किया। इस ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन छात्र कल्याण निदेशालय की 'लिटरेरी एंड डिबेटिंग सोसायटी' की अध्यक्ष डॉ. अपर्णा की देखरेख में हुआ। सोसायटी के उपाध्यक्ष डॉ. देवव्रत ने बतौर निर्णायक की भूमिका निभाते हुए परिणामों का मूल्यांकन किया। छात्र कल्याण निदेशक ने बताया कि सोसायटी के सचिव डॉ. राजेश कथवाल और सदस्य डॉ. विरेन्द्र दलाल ने पंजीकरण व गूगल फार्म तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतिभागियों से विद्यार्थियों में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन होती है और उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में बढ़-चढक़र भाग लेना चाहिए।

अक्षय मेहता
कृषि महाविद्यालय, हिसार
प्रथम स्थान

सचिन गर्ग
कृषि महाविद्यालय, हिसार
द्वितीय स्थान

रीतिका
कृषि महाविद्यालय, कौल
तृतीय स्थान

मित्रता दिवस के उपलक्ष में 01.08.2020 को आयोजित ऑनलाईन प्रतियोगिता के विजेता